रागों का तुलनात्मक अध्ययन

राग कोमल रिषभ आसावरी एवं राग आसावरी

समता –

- राग कोमल रिषभ आसावरी एवं राग आसावरी – दोनों का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गांधार माना गया हैं।
- राग कोमल रिषभ आसावरी एवं राग आसावरी – दोनों की जाति औड़व–सम्पूर्ण हैं।
- राग कोमल रिषभ आसावरी एवं राग आसावरी – दोनों के आरोह में गांधार व निषाद स्वर वर्जित हैं।
- राग कोमल रिषभ आसावरी एवं राग आसावरी – दोनों का गायन समय दिन का द्वितीय प्रहर माना गया हैं।
- राग कोमल रिषभ आसावरी एवं राग आसावरी – दोनों उत्तरांगवादी राग हैं।
- पूर्वांग में दोनों रागों में रे म प ध म प, तथा उत्तरांग में म प ध सां, रें नि ध – की चलन का समान रूप से प्रयोग होता हैं (रागों के अनुसार रिषभ में बदलाव)।
- राग कोमल रिषभ आसावरी एवं राग आसावरी – दोनों रागों की प्रकृति शांत व गंभीर मानी गयी हैं।

विभिन्नता –

	राग–कोमल रिषभ आसावरी	राग–आसावरी
1	राग कोमल रिषभ आसावरी भैरवी थाट के अन्तर्गत हैं।	राग आसावरी, आसावरी थाट के अन्तर्गत हैं।
2	इस राग में रिषभ, गांधार, धैवत व निषाद स्वर कोमल प्रयुक्त होते है।	इस राग में गांधार, धैवत व निषाद स्वर कोमल एवं बाकी सभी शुद्ध स्वर प्रयुक्त होते है।
3	राग कोमल रिषभ आसावरी में कोमल रिषभ का प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जाता हैं, यथा – ग रे सा।	राग आसावरी में रिषभ का ग सारे सा – इस प्रकार षड़ज के कण से युक्त होकर थोड़ा दीर्घ करके गाया जाता हैं।
4	राग कोमल रिषभ आसावरी में ध म प के पश्चात् अधिकतर पंचम का लंघन करके ध म ग रे सा – स्वर समूह का प्रयोग किया जाता हैं।	राग आसावरी में ध म प के पश्चात् या तो म प ध नि ध प, या म प ध सां या ग सारे सा – स्वर समूह का प्रयोग किया जाता हैं।
5	राग का स्वरूप– आरोह : सा रे म प ध सां अवरोह : सां, रें नि ध म प, म ग रे सा पकड़ : ध म प, म ग रे सा	राग का स्वरूप– आरोह : सा रे म प ध सां अवरोह : सां नि ध प, म ग रे सा पकड़ : म प ध म प ग रे सा